आज़ाद फाउण्डेशन

आज़ाद परिंदे

न्यूजलेटर (सीमित वितरण हेतु) आज़ाद फाउण्डेशन, वर्ष 2019 अंक 15

अपने सपनों के हाइवे पर चला रही हूं अपनी गाड़ी

हॅलो, नमस्ते, सलाम!

दोस्तो, कैसे हैं आप? आज़ाद परिंदे के इस पंद्रहवें अंक में आप सबका स्वागत है। उम्मीद है आप सब अपनी ज़िंदगी में हर पल कुछ नया सीख रहे होंगे। ठीक वैसे ही जैसे मैंने आज़ाद में आने के बाद आत्मविश्वास से भरी ऐसी कई महिलाओं को देखा, जो रोज़ अपने जीवन की कठिनाइयों का सामना करते हुए पूरे उत्साह के साथ आगे बढ़ रही हैं। ऐसी ही लगभग 20 साल की एक महिला ड्राइवर है, जो आप सभी के बीच से निकलकर अपनी कहानी आप सबके साथ साझा कर रही है। आप सोच रहे होंगे कि वह ड्राइवर है कौन? कहाँ से आई? किस सेंटर से ट्रेनिंग लेकर निकली और आज कैसे यहाँ लिख रही है? तो आपको बता दूँ कि वह ड्राइवर मैं ही हूँ। मेरा नाम है, ज़ीनत और मैं 2015 में पूर्वी दिल्ली सेंटर से आज़ाद से जुडी और 2018 से सखा के लिए काम कर रही हूँ।

आज़ाद में जुड़ने के बाद अक्सर मुझे यह शब्द सुनाई देता था- सशक्तिकरण! आख़िर है क्या यह सशक्तिकरण? इतना लम्बा शब्द जो बोलने में जितना कठिन है, पहचान करने में उतना ही मुश्किल। जब ट्रेनिंग शुरू की, तो जहाँ देखो सब यही बोलते थे कि तुम्हें सशक्त बनना है। कुछ महीनों के बाद तुम सशक्त बन जाओगी या यूँ कह लो कि तुम अभी सशक्तिकरण के रास्ते पर हो। उस समय बार-बार यह शब्द सुनकर यही लगता था कि शायद मॉडर्न महिला को सशक्त कहा जाता है या उसे, जो घर में बात-बात पर लड़ाई कर ले। उसे जो रात में भी बाहर घूमती हो या फिर उसे जो सबको जवाब दे दे। लेकिन आज मुझे यह सोचकर हँसी आती है कि सशक्तिकरण वह नहीं था, जो मैं सोचती थी। इसका अर्थ तो खुद पर विश्वास, अपने फ़ैसलों पर भरोसा, हिंसा न करना व उसे न सहना और यह समझना है कि सबको बराबरी का अधिकार है। आज मेरे लिए यही है, सशक्तिकरण!

मेरे 4 भाई और 2 बहनें हैं। पिता निर्माण श्रमिक के रूप में काम करते हैं और मेरी माँ की मृत्यु बीमारी के कारण पिछले साल हो गई। लगभग चार साल पहले मम्मी और मैंने अपने घर के पास कुछ लोगों को आज़ाद के पर्चे देते हुए देखा। मेरी उसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन मेरी माँ ज़िद कर रही थी और फिर यह तय हो गया कि मैं बताए गए पते पर जाकर दाख़िला लूँ। आज सशक्त महिला बनने का श्रेय मैं अपनी माँ को देती हूँ। मेरी मम्मी हमेशा चाहती थी कि लड़कियों को स्वतंत्र होना चाहिए। मेरी माँ जैसे-तैसे पैसे बचाकर मुझे ड्राइविंग के लिए भेजती थी, ताकि मैं किसी मुकाम पर पहुँच सकूँ।

घर कि परिस्थितियों के कारण मैं ट्रेनिंग के तुरंत बाद जॉब नहीं ले पाई। लेकिन घर चलाने के लिए और माँ की बीमारी का सामना करने के लिए मुझे चार महीने एक छोटी-मोटी नौकरी करनी पड़ी। उसमें मुझे लोगों के घर पर दरवाजे खटखटाते हुए, विम लिक्विड आदि बेचना पड़ता था। मैंने पाया कि वह बहुत थका देने वाला काम था और मुझे अच्छा पैसा भी नहीं मिल रहा था। मुझे हमेशा से लगता था कि मेरी माँ मुझे कमाते हुए देखना चाहती थी और तब तक वह हर रोज़ मौत से लड़ती रही, जब तक कि मैं एक कुशल ड्राइवर नहीं बन गयी। जिस दिन माँ को यह पता लगा कि मेरी नौकरी सखा में तय हो गयी है, उसी शाम को मेरी माँ का देहांत हो गया। ऐसा लगा जैसे कि मेरी माँ को जो चाहिए था, उसे वह मिल गया था।

मेरी माँ से मुझे सीखनेऔर काम करने की स्वतंत्रता मिली। शुरुआत में मैने ट्रेनिंग को गंभीरता से नहीं लिया, लेकिन बाद में मुझे गाड़ी चलाना अच्छा लगने लगा। अपने पिता और भाईयों के साथ मेरी अनबन थी। जब मैंने आज़ाद में ट्रेनिंग शुरू कि थी, तो मेरे भाई-पापा मेरी कोई बात नहीं मानते थे। लेकिन ड्राइवर बनने के बाद मैंने भी घर की ज़िम्मेदारी उठायी। अब वे आज़ाद और सखा पर भरोसा करते हैं। जिन महिलाओं को वाहन चलाना सिखाया जाता है, उनके लिए काम का अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराया जाता है। पहले मेरे परिवार को अंधेरा होने पर घर से बाहर चले जाने और आधी रात को घर लौटने पर चिंता होती थी। लेकिन अब मेरे परिवार को कोई आपत्ति नहीं होती है। उन्हें मुझ पर और मेरी संस्था पर पूरा विश्वास है। यहाँ तक कि मेरा परिवार अब मुझ पर शादी करने के लिए दबाव भी नहीं डालता, क्योंकि मैंने उन्हें समझाया है कि अगर मैं कभी शादी करना चाहूँगी, तो वह फ़ैसला सिर्फ़ मेरा होगा।

कम्युनिकेशन की ट्रेनिंग से मेरे व्यक्तित्व में बहुत ठहराव आया। इस दौरान मेरी ज़िंदगी में बहुत सारे स्पीड ब्रेकर आये और मुझे काफ़ी कुछ सुनने को भी मिला। लोगों ने मेरी ड्राइविंग पर कई सवाल उठाये, जैसे कि मैं कभी हाईवे पर गाड़ी नहीं चला पाऊँगी। लेकिन आज मैं पूरे आत्मविश्वास के साथ अपने सपनों के हाईवे पर रफ़्तार से अपनी गाड़ी चला रही हूँ। यह तो सिर्फ़ मेरी कहानी है। इस अंक में आपको हिम्मत से भरी और भी कई दिलचस्प कहानियाँ मिलेंगी, जो आज़ाद के मेरे साथियों द्वारा लिखी गयी हैं। आप सबको भी अपनी सशक्तिकरण की झलकियाँ उन कहानियों में दिखाई देंगी। पढ़िए, एन्जॉय कीजिए! अपने फ़ैसलों पर विश्वास रखिये और आगे बढ़ते जाइये!

सशक्त है महिला ड्राईवर

मैंने यह देखा है कि मेरी बस्ती की बहुत सी लड़कियों ने अपने जीवन को बेहतर बनाया है। आसपास की लड़कियों और आज़ाद में अपने साथ की ड्राइवर को देखती तो लगता कि मेरे लिए भी यही सही है कि मैं फिर ड्राइविंग प्रैक्टिस करके ड्राइवर की जॉब लूँ। आज़ाद से सीखकर बहुत सी लड़कियाँ अपनी गाड़ी ख़रीदकर उबर-ओला में चला रही हैं, कुछ एडवरटाइज़िंग वैन चला रही हैं। अपनी मेहनत से परिवार को सुविधाएँ दे रही हैं, बच्चों को बेहतर स्कूल में पढ़ा रही हैं और कुछ तो पूरे घर का ख़र्च उठा रही हैं, कुछ ने तो ज़मीन भी ख़रीद ली है। आज सब कुछ करते हुए वे परिवार में अपनी जगह बना पाई हैं। वे सभी मेरे लिए आदर्श और सशक्त महिलाएँ हैं। इन्होंने समाज को दिखा दिया है कि महिलाओं को सिर्फ़ और सिर्फ़ मौके की तलाश है।

● बिंदिया, जयपुर

बराबरी का अधिकार

मैं परवाज़ लीडरशिप प्रोगाम का हिस्सा हूँ। मैंने काम करते हुए यह महसूस किया और देखा कि एक सशक्त महिला वह है, जो अपने निर्णय स्वयं लेती है। घर और समाज में उसका बराबरी का समान अधिकार होता है। उसे अपने घर-परिवार में सभी मूलभूत अधिकार मिलते हैं। सशक्त महिला वह है, जो न हिंसा सहे और न स्वयं हिंसा करे। अपने अधिकारों के लिए लड़े और आगे बढ़े।

● प्रमिला वर्मा, जयपुर, परवाज़ लीडर

सशक्तिकरण है जागरूकता

मैंने यह देखा है कि अक्सर महिलाओं को किसी भी प्रकार का काम करने से मना किया जाता है और वे अपने विचार खुलकर नहीं रख सकती हैं और उन पर घरवालों की पाबंदी होती है। लेकिन आज़ाद से जुड़ने और गाड़ी चलानी सीखने के बाद उन्हें इन सभी परेशानियों का सामना करने में आसानी हो रही है। हर महिला सशक्त है जो गाड़ी चलाती है, बिना किसी रोक-टोक व डर के बाहर आना-जाना करती है।

● संजय, दक्षिणी दिल्ली, एम.जी.जे.

खुलकर जीने की आज़ादी

जो महिला घर से बाहर जा कर काम करे और अपनी मर्ज़ी से अपना जीवन जिये, वह महिला मेरी नज़रों में सशक्त है। घरवालों को ऐसी किसी भी महिला या पुरुष पर रोक-टोक नहीं करनी चाहिए। हम सब एक समान हैं। ऐसे ही हम दूसरों को सशक्त बनाने में मदद कर सकते हैं और दूसरों के लिए मिसाल बन सकते हैं।

● इरशाद, उत्तरी दिल्ली

हर वर्ग में बराबरी का दर्ज़ा

सशक्तिकरण का अर्थ है, महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक स्थिति में भागीदारी। मेरे लिए सशक्तिकरण का मतलब है, महिलाओं को मज़बूत बनाना। समाज के हर वर्ग में उनका भी बराबरी का दर्ज़ा होना चाहिए। जब मैंने गाड़ी चलाना शुरू किया तो सबकी धारणा बदल गई। अब मुझे भी अपने ऊपर गर्व महसूस होता है।

● काजल, दक्षिणी दिल्ली

सारे महत्त्वपूर्ण निर्णय लेती हूँ

मैं आर्थिक रूप से सशक्त बन कर अपने सारे निर्णय स्वयं लेती हूँ। मैं अपनी पढ़ाई और काम करके अपनी आर्थिक और सामाजिक स्थिति में सुधार कर अपनी नई पहचान बनाना चाहती हूँ। जब मैं आज़ाद से जुड़ी तो मैंने अपने से खुद के पैसों से फ़ोन ख़रीदा, उस फ़ोन का इस्तेमाल मैं खुद करती हूँ। अपने घर में सारे अहम फ़ैसले लेती हूँ और मैं आगे बढ़कर भारत को हिंसा मुक्त बनाना चाहती हूँ। न हिंसा करूँगी, न हिंसा सहूँगी।

● मीना देवी, जयपुर, परवाज़ लीडर

हौंसलों को नई उड़ान मिली

सशक्तिकरण का मेरे लिए अभिप्राय है कि जो मान-सम्मान एक लड़के को दिया जाता है, वह हमें भी मिले। चाहे वह घर हो या काम करने का स्थान हो, या कोई भी जगह हो। लड़के को घर से बाहर जाने की पूरी इजाज़त होती है। अपने करियर को लेकर जैसे लड़कों को फ़ैसला लेने का हक होता है, वैसे लड़कियों को भी होना चाहिए। उन्हें भी बराबर मान-सम्मान मिलना चाहिए। मैं जब से आज़ाद फाउंडेशन से जुड़ी हूँ, तब से लेकर अब तक मैंने खुद में काफ़ी बदलाव महसूस किया है। अब मैं अपने फ़ैसले स्वयं ले सकती हूँ। अपनी मर्ज़ी से कहीं भी आ-जा सकती हूँ। पहले मैं बाहर आने-जाने में बहुत घबराती थी, लेकिन अब ऐसा नहीं होता और इससे मेरे हौंसलों को नई उड़ान मिली है। मुझे अब लगता है कि इसे ही सशक्त होना कहते हैं। मुझे अब लगता है कि इसे ही सशक्त होना कहते हैं।

● काजल, पूर्वी दिल्ली

गैर बराबरी पर प्रश्न उठाना

सशक्तिकरण का मतलब मेरे लिए परिवार और समाज में नई सोच को लाना है, जो जेंडर समानता पर आधारित हो। मेरी नज़र में लड़की को हर उस रिवाज पर प्रश्न उठाना चाहिए, जो ग़ैरबराबरी पर आधारित है। उन रिवाजों का बहिष्कार करना है, जो असमानता को बढ़ाते हैं या उन्हें बनाये रखने में मददगार होते हैं। हर लड़का यह संकल्प ले कि वह किसी पर भी किसी प्रकार की हिंसा नहीं करेगा, तो महिलाओं पर होने वाली हिंसा रुक जायेगी। वह बाल-विवाह नहीं करेगा, तो बाल-विवाह पर रोक लगेगी। मैंने आज़ाद में आकर सशक्तिकरण के अर्थ को गहराई से जाना व उसे अपनाया। स्वयं अपने जीवन से शुरू करें, जिससे आप इस लायक बन सकें कि दूसरों को भी सीख दें।

● दीपक शर्मा, एम.जी.जे.

मजबूरी में भी पीछे नहीं हटी

मेरी पद्मा मैम सशक्त महिला हैं, जो हर महिला व लड़की को सही राह दिखाती हैं और आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हैं। वे सबको महसूस कराती हैं कि हम भी सब कुछ कर सकते हैं। जब हम अक्सर मायूस होकर ट्रेनिंग न करने का फ़ैसला ले लेते हैं, तो पद्मा मैम ही हमें बार-बार समझाती हैं कि इतनी दूर आकर हिम्मत छोड़ दोगी, तो बाकी महिलाएँ भी आपको देखकर पीछे हट जाएँगी। हर बार समझाती हैं कि हमें अपनी ज़िंदगी के फ़ैसले लेने का अधिकार है। उनकी यही सब बातें सुनकर मुझे खुद पर भरोसा हुआ है। अब मुझे हारने में डर नहीं लगता। जब मैं हालात के हाथों मजबूर हो जाती हूँ, तो पहले की तरह पीछे नहीं हटती। अब मैं उन हालात का सामना डट कर करती हूँ और उनसे निपटने की हिम्मत भी रखती हूँ। मैं अब सशक्त हो चुकी हूँ और अपनी बेटियों को भी सशक्त बनाऊँगी।

सलमा, पूर्वी दिल्ली

हार नहीं मानी

मेरी माँ एक सशक्त महिला है। पिताजी माँ को छोड़कर चले गए थे। हम पाँच बहनें थीं, लेकिन मम्मी ने हार नहीं मानी। घरों में चौका-बर्तन का काम करके हमें पढ़ा-लिखाकर इस काबिल बनाया कि हम आगे कुछ कर सकें, इसलिए मुझे लगता है कि मेरी मम्मी सशक्त हैं और मेरी हिम्मत का स्रोत हैं।

प्रियंका, पूर्वी दिल्ली

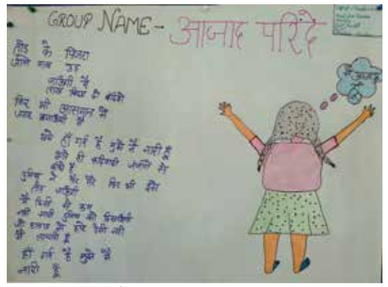

● मनीषा वर्मा मनीषा, ज्योति, मुस्कान ख़ातून, आज़ाद किशोरी प्रोग्राम

आत्मनिर्भर बनी हूँ

मैं खुद को सशक्त महिला के रूप में देखती हूँ, क्योंकि मैं अब अपने निर्णय खुद लेने लगी हूँ। मैं किसी पर निर्भर नहीं हूँ और आत्मनिर्भर बन चुकी हूँ। मुझे सही-ग़लत की पहचान है और समाज में भी मेरी एक पहचान बन गई है। मैंने शबनम नाम की एक महिला को ड्राइविंग के बारे में जानकारी देते हुए उसे बताया कि वह कैसे आत्मनिर्भर बन सकती है। उसे भविष्य के बारे में बताया कि वह कैसे अपने पैरों पर खड़ी हो सकती है और समाज में कैसे अपनी पहचान बना सकती है।

● रूबी यादव, कोलकाता

● नूरजहाँ ख़ातून, उत्तरी कोलकाता

विरोध जरूरी है

जान-पहचान की औरतों में मैं अपनी सास को ही ज़्यादा सशक्त मानती हूँ, क्योंकि मेरे ससुरजी कोलकाता से बाहर रहते थे। वे कभी भी सासू माँ की तरफ़ मदद का हाथ नहीं बढ़ाते थे, फिर चाहे वह आर्थिक रूप से हो या मानसिक रूप से। सासू माँ ने कोलकाता के किराये के घर में रहकर नौकरी करके अपने दो बेटों को ग्रेजुएट बनाया तथा अपना एक घर भी बनाया, जिसमें हम अभी रह रहे हैं। मुझे भी उन्होंने सिखाया है कि अपनी पति के अत्याचारों का विरोध करूँ।

● शम्पा नंदी, कोलकता

खुले विचारों वाली

मुझे अपनी बहन जैसा बनना है। वह कार चलाती है, इंडिपेंडेंट है और अपनी किसी भी परेशानी से लड़ सकती है। वह कहीं पर भी जा सकती है, वह घर के कामों में निपुण है और उसकी एक अलग पहचान भी है। बाहर भी लोग उसे बहुत पसंद करते हैं और इस बात पर गर्व करते हैं कि वह कार चलाती है।

● देवकी, मॉडल टाउन

समाज में खुद सुधार सकती हूँ

मुझे सुनीता ठाकुर (जेंडर और कानूनी अधिकार का प्रशिक्षण देने वाली मैम) जैसी महिला बनना है। मैं उनकी तरह कानून और धाराओं के बारे में जानना चाहती हूँ। महिला घर और समाज में कैसे रह सकती है, किन-किन परिस्थितियों में लड़ सकती है। कौन सा कानून कब और कहाँ काम आता है, वे सब जानती हैं। मैं भी उनके जैसी बनना पसंद करूँगी। मुझे लगता है कि अगर मैं उनकी तरह बन गई, तो आधा समाज मैं खुद सुधार सकती हूँ।

श्राजकुमारी, मॉडल टाउन

कुछ भी कर सकते हैं

मेरे विचार में ऐसी महिला मेरी मम्मी हैं और मैं अपनी मम्मी की तरह बनना चाहती हूँ। मेरी मम्मी एक सशक्त महिला हैं, जो अपने घर-परिवार को भी अच्छी तरह संभालती हैं और बाहर नौकरी भी करती हैं। वे किसी भी काम को करने में हमारी मदद करती हैं और हमेशा हमारे साथ खड़ी रहती हैं। उन्हें अपने ऊपर बहुत विश्वास रहता है कि कोई भी मुश्किल मनुष्य से बड़ी नहीं होती है। हम चाहे तो कुछ भी कर सकते हैं।

● रेशमा, मॉडल टाउन

मेरी दीदी ...

मेरे विचार में मेरी बुआ की लड़की मेरी शीतल दीदी एक सशक्त महिला हैं। मेरी दीदी ज़्यादा पढ़ी-लिखी नहीं हैं, लेकिन उन्होंने ड्राइविंग सीखी और आत्मनिर्भर बनीं। आज मेरी दीदी पूरी तरह से आत्मनिर्भर हैं और अपने परिवार को भी संभालने में भी हाथ बँटाती हैं। इसके लिए उन्होंने बहुत मेहनत की है, इसलिए मेरे लिए वे सशक्त महिला हैं।

● सिमरन, पूर्वी दिल्ली

मेरे विचार से मेरी अर्चना दीदी एक सशक्त महिला हैं। वे बड़े ही आराम से बिना डरे सारे काम कर लेती हैं और रात को भी बाहर आना-जाना कर लेती हैं। उन्होंने अपनी लाइफ़ में बहुत स्ट्रगल किया है। आज वे इतनी सशक्त महिला हैं कि सारे काम अकेले कर लेती हैं। अपने दोनों बेटों को खुद ही संभाल रही हैं। वे अपने पति पर निर्भर नहीं हैं, इसलिए मैं उन्हीं की तरह बनना चाहती हूँ।

● सीमा, दिल्ली

जब बदला मैंने अपना नज़रिया

मेरी सशक्तिकरण की यात्रा के दौरान मुझे परेशानियाँ आई थीं, जैसे कि परिवार का रोकना और मुझे बोलना कि बेकार में यह सीख रहा है, इसका कोई फ़ायदा नहीं है। मुझे अपने जैसे अन्य लड़कों के साथ मिलकर काम करने में मज़ा आता है। मैं अपने दोस्तों एवं परिवार को समझाता हूँ कि आज़ाद के एम.जी.जे. प्रोग्राम से जुड़ने के बाद मुझे समझ आया कि महिला-पुरुष बराबर है। अपने आसपास की महिलाओं के लिए मेरा नज़रिया बदल गया है मैं अब महिलाओं को समानता से देखता हूँ और अब मुझे लगता है कि मैं अपनी नज़रों में सशक्त हूँ क्योंकि मेरी लोग इज़्ज़त करते हैं।

● अरविंद, उत्तरी दिल्ली

बाधा था, मेरा अपना डर

सशक्तिकरण की यात्रा में मुझे बहुत बड़ी बाधा का सामना करना पड़ा और वह था, मेरा अपना डर। समाज व परिवारवाले मेरे बारे में क्या सोचेंगे, मुझे किस नज़र से देखेंगे, रीति-रिवाज बहुत सी बातों की इजाज़त नहीं देते। इस विचार से डर लगता था। जब मैं आज़ाद से जुड़ी, तब मैंने अपने डर से लड़ना शुरू किया। घर से पहली बार बाहर निकली और सशक्तिकरण से संबंधित अलग-अलग तरह की ट्रेनिंग ली, तो समझ आया कि मेरे अपने अधिकार हैं। मेरा खुद का वजूद है। अब मैं आज़ाद हूँ और सशक्त हूँ। हाल ही में मैंने दसवीं कक्षा पास की है। मार्च 2019 में हवाई जहाज़ से मैं अकेले पूना गई। उस यात्रा के दौरान मुझे महसूस हुआ कि मैं सशक्त महिला हूँ, क्योंकि मैंने अकेले ही पूरा सफ़र तय किया।

● गीता, सखा कैप्टन

किसी की प्रॉपर्टी नहीं हूँ

मुझे नहीं पता था कि हिंसा क्या होती है, लेकिन जब मैं आज़ाद में आई तो मुझे पता चला। यहाँ आकर मैंने हर कठिनाई का सामना करना सीखा। आज़ाद में आने के बाद मुझे पर लग गए और मैं भी अब उड़ना चाहती हूँ। मैंने जब सेल्फडिफ़ेंस की क्लास ली तो मेरे अंदर जैसे एक ताकत आ गई। मैं अपनी रक्षा खुद कर सकती हूँ और मैं किसी की प्रॉपर्टी नहीं हूँ कि कोई भी मुझे ख़रीद ले। मैं एक प्रोफेशनल ड्राइवर बनना चाहती हूँ। अगर किसी के साथ कुछ ग़ैरकानूनी हो रहा है, तो उसके लिए मैं २४ घंटे तैयार रहती हूँ। यह मेरा सशक्तिकरण है।

● निर्मला देवी, मॉडल टाउन

खुद पर भरोसा

मैं पढ़-लिखकर कुछ बड़ा करना और बड़ा बनना चाहती थी, जिससे मैं अच्छा कमा सकूँ। हाल ही में मैंने खुद को सशक्त महसूस किया था, जब मैं किसी पर निर्भर हुए बिना अपने आप अकेले आने-जाने लगी। मैं दूसरों को यह समझा सकती हूँ कि कोई भी महिला सब कुछ कर सकती है। यह ज़रूरी नहीं कि महिला पढ़ाई-लिखाई से ही आत्मनिर्भर बने, बल्कि किसी भी अपरंपरागत रोज़गार को अपनाकर वह ऐसा कर सकती है। बस उसे खुद पर भरोसा होना चाहिए। उसे दूसरों की अनचाही बातों का मुँहतोड़ जवाब देना चाहिए।

● सिमरन, पूर्वी दिल्ली

झिझक हटी

अभी हाल में ही मैंने एक मीटिंग के दौरान कई महिलाओं, पुरुषों और बच्चों के सामने जेंडर आधारित जानकारी दी। ऐसा करके मुझे काफ़ी अच्छा लगा और मुझे सशक्त महसूस हुआ, क्योंकि पहले किसी भी महिला से बात करने में मुझे झिझक होती थी। अब मुझे पता है कि सब एक समान हैं।

● विशाल, उत्तरी दिल्ली

अहम फ़ैसले लेने में सक्षम हूँ

जब मैंने आज़ाद फाउंडेशन में काम किया तो मुझे ताकत मिली। मैं अपना परिवार का ख़र्चा चलाने में सशक्त हुई। इस दौरान मैं अपने बच्चों की छोटी-छोटी ख्वाहिश पूरी करने में कामयाब हुई। मैं अपने पैसों का खुद निर्णय ले पायी। पहले अपनी ताकत को दबाकर रखती थी। पहले मुझसे परिवार से जुड़े फ़ैसलों के बारे में पूछा नहीं जाता था। अब मैं अपने परिवार का फ़ैसला खुद ले सकती हूँ और दूसरों को समझा भी सकती हूँ। मुझे किसी बात का डर नहीं है। मैं अपने और अपने परिवार के अहम फ़ैसले लेने में सक्षम हूँ।

● प्रिया सैनी, जयपुर राजस्थान, परवाज़ लीडर

जिन्दगी में आई लाल बत्तियों से नहीं डरी

अगर कुछ पाना है, तो खुद का आत्मविश्वास बढ़ाना होगा। जब मैंने अपनी सशक्तिकरण की यात्रा शुरू की, तो पैसे न होने के कारण चार-चार घंटे ट्रेन का इंतज़ार करना पड़ता था। लेकिन घर की परेशानियों में मैंने अपनी इस यात्रा को नहीं छोड़ा। मेरा पति अक्सर मुझे कहता है कि तू कुछ नहीं कर पायेगी, लेकिन उसे यह नहीं पता कि मैंने भी ठान लिया है कि मैं सब कुछ अकेले करके दिखाऊँगी। आज जब गाड़ी चलाती हूँ, तो मुझे लगता है कि मैंने अपनी ज़िंदगी में सबसे मजबूत फ़ैसला लिया। अब मैं आने वाले समय में बच्चों को अच्छी पढ़ाई दे सकती हूँ। अभी हाल में ही मैंने अपने आप रोड़ पर गाड़ी चलाई और लाल बत्ती का सामना किया और मुझे लगा कि मैं आज सशक्त हूँ।

● लक्ष्मी, पूर्वी दिल्ली

मेरा सशक्तिकरण, मेरी पहचान

सशक्तिकरण की मेरी यात्रा बहुत ही रोचक है क्योंकि इस यात्रा के दौरान मैंने बहुत सारी बाधाओं का सामना किया, जैसे अलग-अलग समुदाय के लोगों से बात करना, सामाजिक आलोचना, इत्यादि। लेकिन आज़ाद फ़ाउंडेशन में जुड़ने के बाद मैं इन सभी बाधाओं का सामना बहुत ही सरलतापूर्ण कर लेता हूँ। आज़ाद से जुड़ने के बाद मैंने अपने जीवन में बहुत से कार्य किए, जिन्होंने मुझे समाज और मेरी खुद की नज़रों में सशक्त बनाया। कुछ महिलाएँ काम करके अपना पूरा परिवार का ख़र्च व परिवार चला रही हैं। ऐसी महिलाएँ भी हैं, जो आज़ाद फ़ाउंडेशन से कार ड्राइविंग सीख कर अपने सपनों को जी रही हैं तथा अपने परिवार चला रही हैं। सशक्त होना केवल काम करके घर चलाना नहीं होता। सशक्त का अर्थ है कि जो काम के साथ-साथ सामाजिक और पारिवारिक तथा शारीरिक रूप से भी सशक्त है।

● अभिषेक, एम.जी.जे. दिल्ली

उस मुकाम को हासिल किया

मेरे लिए सशक्तिकरण का मतलब है, खुद को इस काबिल बनाना कि हमें दूसरों का सहारा न लेना पड़े। अपनी मेहनत से उस मुकाम को हासिल करना, जहाँ पर हम किसी पर निर्भर न रहें। स्वयं को सशक्त बनाना किसी के लिए भी आसान नहीं होता। उसके लिए बहुत सी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। शादी के बाद मुझे पता चला कि मैंने आगे न पढ़कर कितनी बड़ी ग़लती की है। इसीलिए शादी के बाद मैंने आज़ाद फ़ाउंडेशन में दाख़िला करवाया, लेकिन यह भी मेरे लिए आसान नहीं था। आज़ाद फ़ाउंडेशन में मैंने ड्राइविंग का स्किल चुना। यहाँ आने के लिए सबसे पहले मुझे अपने सास-ससुर की अनुमति नहीं मिली। लेकिन मैं पहले एक मौका खो चुकी थी और अब इसे नहीं खोना चाहती थी। इसलिए जब मैंने अपने घर में विरोध करना शुरू किया, तो सबने मेरा साथ छोड़ दिया। मुझे यहाँ आने के लिए अपने दो बच्चों को साथ लाना पड़ता था। कभी उन्हें स्कूल छोड़ती और उसके बीच में मिलने वाले वक्त में मैं आज़ाद में आ जाती। लेकिन धीरे-धीरे मैंने अपनी दिनचर्या को अपने काम के अनुकूल बना लिया। अब मैं जब अपनी मंज़िल की तरह बढ़ रही थी, तो अपने आपको सशक्त महसूस करती थी। यहाँ आकर मुझे बहुत प्रेरणा मिलती है और आगे बढ़ने का हौंसला मिलता है।

● मीनाक्षी, पूर्वी दिल्ली

सरकारी ऑफिस गया

कम्युनिटी में महिलाओं और पुरुषों से बात करने में मुझे हेज़िटेशन होती थी। कम्युनिटी में लोगों का विश्वास मेरे प्रति कम था, परंतु अब मैं कम्युनिटी में बिना हेज़िटेशन के लोगों से बात कर लेता हूँ। लोगों के लिए अब मैं भरोसेमंद बन गया हूँ। अपने इस बदलाव के कारण अब मैं बहुत अच्छा महसूस करता हूँ । अधिक से अधिक लोगों से मिलना व उनसे जुड़ना और समाज में लोगों के लिए काम करना मुझे और सशक्त महसूस कराता है। अभी हाल ही में मैंने लेबर का पैन कार्ड, आधार कार्ड बनवा कर लोगों की मदद की, जिससे मुझे सशक्त महसूस हुआ। पहले मैं सरकारी ऑफ़िस एस.डी.एम. सी., एम.सी.डी. ऑफिस नहीं गया था, लेकिन बाद में उन्हीं सरकारी ऑफ़िसों में जाकर मैंने लोगों की मदद की, इससे मुझे सशक्त महसूस हुआ।

● दीपक, दक्षिणी दिल्ली, एम.जी.जे.

रात को गाड़ी चलाई

अभी हाल ही की बात है कि हमारा पूरा परिवार गाँव जा रहा था। मेरा भाई गाड़ी चला रहा था और उसकी तबियत ख़राब हो गई। सब लोग डर गये कि अब हम घर कैसे जाएँगे। मैंने कहा कि आप लोग डरो मत, मैं आप सबको आराम से घर ले जाऊँगी। फिर मैंने गाड़ी चलाई वो भी रात को और सबको आराम से घर ले आई। उस दौरान मैंने अपने आपको सशक्त महसूस किया।

● दीपमाला, पूर्वी दिल्ली

मैं खुश रहने लगी

मेरे घर वालों ने मुझे घर से निकाल दिया फिर मैंने एक छोटा सा कमरा किराये पर लिया और अपने बच्चों के साथ वहाँ रहने लगी। 15 अगस्त का दिन था, जब मेरे घर मेरी एक सहेली आई और वह कम से कम 10 साल बाद मुझसे मिली थी। उसने मुझे बताया कि आज़ाद फ़ाउंडेशन में जाकर तुम्हें बहुत कुछ सीखने को मिलेगा। ड्राइविंग सिखाई जाएगी और नौकरी भी मिलेगी। मैंने अपने बच्चों के लिए और अपने लिए ड्राइविंग सीखने का फ़ैसला लिया। फिर मैंने बाहर जाना शुरू किया। मेरे घर के लोगों और आसपास वालों ने बातें बनानी शुरू कर दीं, लेकिन मैंने किसी की नहीं सुनी। बहुत कुछ सीखा और मैं खुश रहने लगी। मैं अब आगे बढ़ चुकी हूँ और पीछे नहीं जाऊँगी। अब मैं अपने फ़ैसले लेने लगी हूँ। कभी बाहर नहीं गई, लेकिन अब बाहर आने-जाने लगी हूँ।

● सलमा, पूर्वी दिल्ली

ड्राइविंग : मेरी सशक्तिकरण की यात्रा

बचपन से हिंसा का शिकार रही हूँ, घर में मुझ पर बहुत रोक-टोक रहती थी। माँ भी लड़का-लड़की में भेदभाव करती है, लड़की को प्यार नहीं करती और लड़कों से प्यार करती है। फिर एक ऐसा पल आया, जब मेरा जीवन खुशियों से भर गया। मेरी टीचर ओमकारी मैम ने मेरी मम्मी को समझाया कि आप अपनी लड़की को बाहर निकालो, उसके भी कुछ सपने हैं और उसे एक मौका दो। बाहर निकलने पर काफ़ी बदलाव आएँगे, गाड़ी चलाना सिखाओ। मेरी मम्मी उनकी बात मान गई और आज मैं बहुत अच्छी ड्राइविंग करती हूँ। मेरे मामा-चाचा और आस-पड़ोस के लोगों ने मेरे मम्मी-पापा से कहा कि यह क्या काम सिखाया है लड़की को? गाड़ी चलाना भी कोई काम है? लेकिन मेरे पिताजी ने उन्हें मुँहतोड़ जवाब दिया कि हमारी लड़की है, हमारी मर्ज़ी हम कुछ भी सिखाएँ। यह सुनकर मुझे जो खुशी मिली, मैं बता नहीं सकती। मेरी ड्राइविंग मेरी सशक्तिकरण की यात्रा है, जो अब आगे बढ़ती ही जाएगी।

● रानी, पूर्वी दिल्ली

घर बनाने का डिसिज़न

मेरे लिए सशक्तिकरण की शुरुआत तब हुई, जब मेरे पति ने मुझे और मेरे बच्चों को बेसहारा छोड़ दिया। उस समय मैं किराये के मकान में रहती थी। पति के जाने के कारण मैं मकान का किराया नहीं दे पाई और मकान मालकिन ने मेरे घर का सारा सामान रख लिया और मुझे धक्के मारकर घर से निकाल दिया। उस समय मेरी छोटी बेटी सिर्फ़ डेढ़ महीने की थी। मैं अपने तीनों बच्चों को लेकर अपनी मम्मी के घर गई। मेरी मम्मी ने मुझे अपने घर में नहीं रखा क्योंकि मैंने अपनी मर्ज़ी से शादी की थी। जब मुझे कोई सहारा नहीं मिला, तो मैंने खुद से एक वादा किया कि मैं किसी भी परिस्थिति में हार नहीं मानूँगी और तब से आज तक मैं अपने सारे काम अपनी मर्ज़ी से करती हूँ। मैं खुद ही सारे डिसिज़न लेती हूँ और अब मैंने अपना एक छोटा सा घर बनाने का फ़ैसला लिया है। मेरा सशक्तिकरण यही है कि अब मुझे कोई भी किसी परिस्थिति में नहीं हरा सकता। मैं जीवन में सभी तरह की परेशानियों से लड़कर आगे निकल जाऊँगी।

● अरूणा, मॉडल टाउन

हिंसा के खिलाफ उठाई आवाज़

मुझे आज़ाद फाउंडेशन में आये 10 महीने हो गए। संस्था में आने से पहले मुझ पर मेरे पति द्वारा बहुत हिंसा की गई। जैसे कि हर रोज़ मारपीट, रोज़ाना पीकर मुझे और मेरे बच्चों के साथ गाली-गलौच करना, मुझे ख़र्चा न देना, आदि। यह सब मैं चुपचाप सहती थी, लेकिन अब मैंने आज़ाद फाउंडेशन में आने के बाद हिंसा के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई। मैं अब पति से अलग अपनी दोनों बेटियों के साथ रहती हूँ। अब मैं अपने फ़ैसले भी खुद लेती हूँ, अपना ख़र्चा खुद चलाती हूँ और अपने बच्चों की हर ज़रूरत को पूरा करती हूँ।

● शिवानी, धानणका बस्ती, हसनपुरा

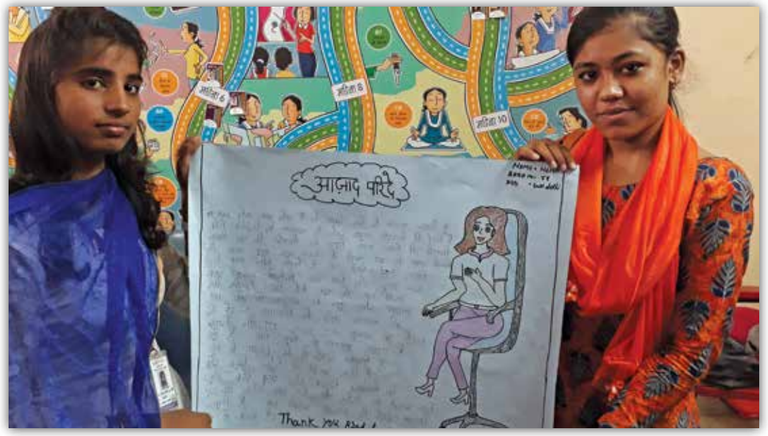

हार ना माने

मैं औरों के साथ बात करूँगी तथा उन्हें अच्छी सलाह दूँगी। जीवन में प्रतिकूल अवस्था में भी हार न मानें, अन्याय सहन न करें और सही रास्ते पर चलकर अपनी रोज़ी-रोटी खुद कमाकर अपने पैरों पर आज खड़ी हो जाएँ।

● मीठू मंडल

मदद करूँगी

अगर मैं किसी लड़की या महिला पर अत्याचार होता देखूँगी, तब मैं उसे वहाँ से निकालने की कोशिश करूँगी। महिलाओं को तथा अपने परिवार के लोगों को उनके अधिकारों की जानकारी देकर मैं उनकी मदद कर सकती हूँ।

● मौसमी घोष

रोक-टोक नहीं, सहयोग करो

महिलाओं के सशक्तिकरण की बातें सभी करते हैं। मैं अपना नज़रिया बताना चाहता हूँ कि सशक्त पुरुष वह है, जो महिलाओं की बराबरी में विश्वास करता है। इसके लिए वह खुद से शुरूआत करता है, जैसे घर-गृहस्थी के कामों में घर की महिलाओं का हाथ बँटाता है। लड़कियों की आज़ादी के लिए माता-पिता से, समाज से बात करता हो, लड़कियों को समान अवसर देता है। वही पुरुष सशक्त है, जो बाहर निकलकर कुछ करने के प्रयास में लगी लड़कियों और महिलाओं पर रोकटोक लगाने की बजाय उनका पूरा सहयोग करता हो।

● आकाश, एम.जी.जे.

डरिए नहीं, सामना करिए

जो लड़कियाँ संसाधन हीन हैं, वे आज़ाद फ़ाउंडेशन में नहीं आ सकती और जिनके परिवार वाले उन्हें सपोर्ट नहीं करते, उन्हें मैं समझा सकती हूँ। उन्हें आगे बढ़ने के बारे में बता सकती हूँ। जो महिलाएँ अपने घर में हैं, अपने पति से डरती हैं मैं उनकी भी मदद कर सकती हूँ। आगे क्या करना है, कैसे करना है, किस समय करना है, उन्हें मैं समझा सकती हूँ। जो आज़ाद तक नहीं आ सकतीं, वे डरे नहीं बल्कि हर मुसीबत का सामना करें और आगे बढ़ें।

● मनीषा, मॉडल टाउन

● सूजाता माखन, कोलकाता

अन्याय का विरोध

मैं दूसरों को अच्छी सलाह दूँगी, ताकि वे किसी काम से पीछे न हटें। अपने आप पर भरोसा करना होगा कि मैं सब काम कर लूँगी। बिना हार माने आगे बढ़ते रहना, अन्याय का विरोध करना तथा सामाजिक काम के द्वारा वृहत समाज से जुड़े रहना। अपने आप को दृढ़ रख कर आगे बढ़ते जाना तथा सामाजिक, लैंगिक तथा कानूनी अधिकारों की जानकारी देना, जिससे हम समाज में सिर ऊँचा उठाकर चल सकें।

● अलीशा खातून

अधिकारों का उपयोग

जो महिला घर से बाहर नहीं जाती, हम उनके घरों में जाकर उन्हें जागरूक करें। अगर कोई हमें कार चलाते देखता है, तो हम उनसे बातचीत करके उन्हें भी आगे बढ़ाएँ। जो महिलाएँ पढ़ी-लिखी नहीं हैं, उन्हें आज़ाद के साथ जोड़कर पढ़ा सकते हैं। उन्हें बाहर निकलने की हिम्मत दे सकते हैं और उन्हें भी सशक्त कर सकते हैं। उन्हें उनके अधिकारों के बारे में बता सकते हैं और फिर उन्हें उन अधिकारों का उपयोग करना सिखा सकते हैं।

● सादिया, पूर्वी दिल्ली

जानकारी द्वारा प्रोत्साहन

हम दूसरों को समाज के बारे में जागरूक कर सकते हैं। कानून व उनके अधिकारों के बारे में बताकर और उनकी हिम्मत व उनके आत्मविश्वास को बढ़ाकर हम दूसरों को सशक्त बना सकते हैं। मैं अपनी जान-पहचान की महिलाओं को काम की तरफ़ जाने का प्रोत्साहन देकर उन्हें सशक्त बनाने में सहायता करूँगी।

● चांद बानो, दक्षिणी दिल्ली

बहुत इज़्ज़त मिलती है

मेरा नाम हिना है और मैं कोलकाता रिश्ता आर्गेनाइज़ेशन में काम करती हूँ। यहाँ जुड़ने से पहले मै बिहार और उ.प्र. में शादियों में नाचने और बधाई माँगने का काम करती थी। अभी मै आर्गेनाइजेशन में काउंसिलर की पोस्ट पर काम करती हूँ अब मुझे बहुत इज़्ज़त मिलती है। पहले तो लगता था कि हम किसी काम के नहीं है, बेकार हैं लेकिन अब बहुत इज़्ज़त मिलती है। अगर मै यहाँ काम नहीं करती तो मेरी ज़िंदगी कुछ और होती और मै कहीं बधाई माँग रही होती। लेकिन अभी बहुत अच्छा लगता है कि मैं ऑफ़िशियली कोई जॉब कर रही हूँ।

● हिना, रिश्ता, कोलकाता, एनटीएल कॉन्फ्रेंस की प्रतिभागी

महिला ट्रैकिंग गाइड

मेरा नाम उर्गेन सोगेल है और मै लदाख से हूँ। मै लदाखी विमेन ट्रैवल कंपनी में ट्रैकिंग गाइड का काम करती हूँ। जब मै स्कूल में थी तो गर्मियों की छुट्टी में गाँव जाती थी, उस समय मैं बहुत सारे ट्रैकर्स को घर के पास से गुज़रते हुए देखती थी। वे सब हमेशा मर्द होते थे और तब मेरे दिमाग में एक ही सवाल उठता कि महिलाएँ क्यों ट्रैकिंग गाइड नहीं बन सकतीं। ट्रैकिंग गाइड की जॉब बहुत दिलचस्प होती है। मुझे हमेशा से घूमना, नए लोगों से मिलना और इंग्लिश में बात करना बहुत पसंद है, इसलिए मैंने इस जॉब को चुना। ट्रैकिंग गाइड बनकर मेरा आत्मविश्वास बहुत बढ़ गया और अब मुझे लगता है कि मैं हर उस काम को कर सकती हूँ, जो एक मर्द कर सकता है।

● उर्गेन सोगेल, लद्दाख, एनटीएल कॉन्फ्रेंस की प्रतिभागी

सफर खूबसूरत हो गया

मैं पहले कोई छोटे से छोटा काम नहीं कर पाती थी क्यूंकि मुझ में एक डर था और अब मैं कोई भी फैसला लेने में ज्यादा वक्त जाया नहीं करती मैंने हाल ही में अपने लिए एक्टिवा स्कूटी ली। अपने गांव का मकान भी बनवाने में परिवार की मदद की जो कि हम सबका सपना था। मेरे घर में लाइट की सुविधा नहीं थी। लेकिन जब से मैंने सखा में ड्राइविंग का काम शुरू किया है तब से मेरी हर माह सैलरी आने लग गयी और उन्ही पैसों से मैंने घर में बिजली का प्रबंध किया। यह सफर आसान नहीं था लेकिन अब आज़ाद के साथ मेरा यह सफर खूबसूरत जरूर हो गया है।

● चांदनी यादव, जयपुर, सखा

गैर परांपरागत रोजगार पर अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस

यह अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस 16-18 जनवरी, 2019 को इंडिया हेबिटेट सेंटर, नई दिल्ली में आज़ाद, सखा, नॉन ट्रेडिशनस लाइवलिहूड नेटवर्क द्वारा आयोजित किया गया। जिसमें लगभग 200 लोग 20 देशों से शामिल हुए। इस कांफ्रेंस के दौरान भिन्न देशों से आए हमारे कई साथी जैसे कि महिलाओं के लिए गैर-पारंपरिक रोजगार से जुड़ी हुई संस्था, सरकारी एवं गैर सरकारी प्रतिनिधि और 25 गैर परंपरागत रोजगार में ज़मीनी तौर पर काम करने वाले हमारे साथी मौजूद थे। उनकी कुछ कहानियां इस आज़ाद परिदें में भी शामिल हैं।

जश्ने-ए-कारवां

आज़ाद 2018 में दस साल का सफर पूरा किया। इस अवसर पर हमने दिल्ली 28 अक्टूबर,2018, जयपुर 11 फरवरी, 2019 और कोलकाता 9 मार्च, 2019 में जश्न मनाया। इस जश्न हम उन सभी महिलाओं को जोड़ पाए जिनके विश्वास और हिम्मत की वजह से आज़ाद संस्था इस मुकाम पर पहुंची। इसके लिए हमने जो कार्यक्रम आयोजित किए उनमें लगभग 700 महिला ड्राईवर जो आज़ाद से प्रशिक्षण ले चुकी है और आज़ाद के दोस्त शामिल हुए।

पाठकों के लिए विशेष सूचना: आप में से जो भी अखबार के लिए लिखना चाहते हैं, सबके साथ बाँटना चाहते हैं ... अपनी कहानी, कोई रोचक अनुभव, कोई संदेश या ख़ास खबर, कोई चित्र या फोटो, शेर-ओ-शायरी, गीत-चुटकुला या विचार, चिंताएँ, कुछ भी, तो ...

संपर्क करें: अमृता 09999332219

संपादक: पदमा पाण्डेय

अन्य सहयोगी: ब्यूटी, पद्माक्षी

बी-7, तीसरी मंज़िल, शंकर गार्डन, विकासपुरी पश्चिमी,
नई दिल्ली-110018

फोन : 011-49056322 • वेबसाइट : www.azadfoundation.com

-: डिस्क्लेमर :-

आज़ाद फाउण्डेशन और सखा दो अलग-अलग संस्थाएँ हैं। आज़ाद एक एन.जी.ओ. है और सखा एक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी।

और कुछ यादें

सोनिया और मैं एक साथ ट्रेनिंग लेते थे और सारी क्लासें हमने एक साथ ही ली। जैसे कम्युनिकेशन, आई.डी.टी.आर., सेल्फ डिफेंस, फर्स्ट ऐड आदि। हम काफी सारी लड़कियां ग्रुप में जाती थी। पर सोनिया उनमें से अलग थी तो बहुत ही हसमुख थी और मिलनसार थी ट्रेनिंग पूरी होने के बाद हमें नौकरियां भी आस-पास ही मिली जिससे हमारा मिलना जूलना बरकरार रहा। इस तरह हम सुख और दुख में एक दूसरे के साथ रहे। लेकिन सोनिया की अचानक मृत्यु से मुझे आज भी यकीन नहीं आता कि सोनिया अब हमारे बीच नहीं रही। लेकिन सोनिया मेरे दिल में और मेरी यादों में हमेशा जिंदा रहेगी।

• अनीता दास, सखा ड्राईवर